International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

''हरियाणा की परम्पराएं : वैश्विक प्रासंगिकता''

'हरियाणा के साहित्य में वैश्विक मानवीय मूल्य'

नीलम
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी)
हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द (हरियाणा)

भारतीय संस्कृति और उसकी आँचलिकता में वैसा ही सम्बन्ध है जैसा हथेली और स्फुटित होने वाली उगलियाँ। लोक साहित्य का वैश्विक परिदृश्य में मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान है। प्रत्येक देश का समृद्ध लोक साहित्य तो राष्ट्रीय जीवन का प्रमुख आधार है। समाज के मूल्यों में चाहे वो सामाजिक सन्दर्भ हो या सांस्कृतिक लोक साहित्य तो समाज का आवश्यक अंग बनकर सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह तो लोक जीवन की अभिव्यक्ति है जिसमें हर व्यक्ति अपने भावों तथा जीवन विशेषों का अविष्कार देखकर असीम आनंद की अनुभूति करता है। जिसमें अपनेपन की मिठास और मानसिक व भावात्मक गरज की पूर्ति शामिल है। लोक साहित्य में अमंगल से मंगल की भावना का विकास है। जीवन को चिन्ता मुक्त कर उसे मनोरंजन के लोक में पहुंचाकर अपनेपन की मिठास से युक्त करना ही तो लोक साहित्य की निधि है।

हरियाणा की लोक निधि पूर्णतः जीवन से जुड़ी हुई है। यह उतनी ही पुरानी है जितनी हमारी सभ्यता। जिसमें जीवन के उतार-चढ़ाव का पड़ाव है प्रत्येक दुःख - सुख, श्रृंगार, वीरत्व, रीति-रिवाज, पूजा, उपासना भी है। समाज को मूल्यवान एकभाव, एक विचार व बाँधने का मधुर प्रयास हरियाणा के साहित्य का मूल्य है।

हरियाणा का लोक साहित्य तो भारतीय संस्कृति का सच्चा व स्वाभाविक चित्र है। जिसकी अभिव्यंजना मानवीय मूल्य में मिलती है। समाज-जीवन, घर-गृहस्थी के मनोरम प्रसंग, जन-जीवन की आर्थिक परिस्थितियां आदर्श सतीत्व, भाई-बहन का आदर्श एवं विशुद्ध प्रेम, दिव्य सात्विक, अलौकिक त्याग और कृष्ण का द्रोपदी की आन को बचाना हमारी मूल्य धरोहर है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

हरियाणा भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का केन्द्रीय स्थल है। यहाँ वेदों की ऋचाओं का गायन हुआ तथा उपनिषदों, ब्राह्मण-ग्रंथों, आख्यकों, पुराणों, स्मृतियों की रचना हुई। 'श्री मद्भगवद्गीता' का अमर संदेश यही प्रसारित हुआ। कृष्ण की लीलाभूमि ब्रज भी हरियाणा से सटी हुई है। हरियाणा की पवित्र भूमि में गरीबदास, दादू, नितानंद, भाई सन्तोख सिंह, घीसा, चरण दास आदि अनेक संतो ने रोहतक, हिसार, जीन्द, सिरसा, नारनौल, आदि में अपना धर्म प्रचार किया। समस्त ऋतुएं विभिन्न प्रकार से मूल्यों का श्रृंगार है। मातृ प्रेम की आश्वस्तता व पारिवारिक सम्बन्धों की स्निग्धता हरियाणा के गीतों में गुजांयमान है।

''आवेगा भी आवेगा, मेरी माँ का जाया आवेगा।

माँ की तील, बाहण का जोड़ा, बहू की झांझण ल्यावेगा।''[1]

समाज सुधार, धार्मिक जागृति व राजनीति चेतना को हरियाणा के लोक गीतों में झंकृत होते हुए देखा जा सकता है। महर्षि दयानन्द के वैदिक विचारों को यह गीत प्रकट करता है।

''मेरा पिरस चढता सुसरा न्यू कहवै बहू लड़के न गुरुकुल घाल्य

लड़के के हिरदै मैं ज्ञान मैं ससुर जी इबके लड़का न दान सै।''2

हरियाणा के साहित्य के लोक गीतों में हृदय का राग आलापता दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति की समन्वय धारा विभिन्न रूपों में हरियाणा के लोक साहित्य में विद्यमान है। प्रत्येक पर्व - त्यौहार जीवन के कष्टदायक व आज के परिवेश की समस्त चिंताओं में मधुरता का रंग भर देते है व लोक जीवन में नवीन उत्साह, उमंग, आशा को संचरित कर देते है।

''बेटी - सास मेरी नैं दाणे भून्ने

खील्ला चुग ल्यी आप।

माँ - मेरी क्ये रोड या जोग्गी थी ?

बेटी - सास मेरी नै गाभरू ले लीया।

माँ - मेरी क्ये बाल्ले जोग्गी थी ?''[1]

भाई-बहन, माँ-बेटी के सम्बन्धों के स्नेह व सुख की मधुरता का गान इसी लोक साहित्य की प्रासंगिकता है।

मंगल कल्याण की भावना के लोक गीत हमारी दीर्घकालीन से चली आती हुई परम्परा का सांस्कृतिक रखाव है। नाथों, सुफियों, संतों का यहाँ अमिट प्रभाव दिखाई देता है। लोकगीतों में 'रामभजनिया का देस', वहीं कहावतों में 'देस्सा मैं देस हरियाणा, जित दूध-दही का खाणा' में इसकी वैष्णव धर्म की भावना दिखाई देती है। इसका हृदय कुरूक्षेत्र तो धर्मक्षेत्र का प्रतीक है। विभिन्न मन्दिर यहां के वास्तुकला के मेरूदंड है। भाई संतोख सिंह पाखण्ड अनीति, अन्याय व अत्याचार का विरोध करते हुए प्रभु से विनय का अनुग्रह करते है -

''मोसो नहीं क्रितधन तो सो उपकारी नाहिं
मोसो न अनाथ नाथ तोसो न बताइए।''[2]

संत नितानंद की वाणी में भी मानवीय मूल्यों का अत्यन्त सूक्ष्मता से चितंन मिलता है। जिसमें दार्शनिक मतो व भक्ति, योग, कर्म की पद्धति है। लोक संग्रह व लोक मंगल की भावना उनका महत्वपूर्ण मूल्य है वो कहते है -

''नितानन्द घर दूर है, चढ़ो सत्य की नाव
झूठा कोई न तिरे, भवसागर दरियाव।''[1]

प्रेम को महत्व देते है। वो कहते है जो व्यक्ति समस्त संसार के प्राणियों के प्रति प्रेम रखता है व मजहबों से दूर है वही प्रभु के दर्शन करता है।

गरीबदास जी कहते है -

''गरीब बिना भक्ति क्या होत है, भावे काशी करबत लोहु।[2]

वहीं हरिदास जी मनुष्य प्रेम को सबसे बड़ा मानवीय मूल्य स्वीकार करते हुए कहते है –

''प्रेम भक्ति में बह गई और भक्ति बरबाद।

तप, तीर्थ, व्रत, हरिदास किसके आए याद।''[3]

मानवीय एकता, मानवतावाद, सामाजिक समानता, सामाजिक न्याय एवं लोक मंगल की भावना समस्त हरियाणा साहित्य में झंकृत होती है। जहाँ हरियाणा के विभिन्न संतो द्वारा मानवीय धर्म को महत्व देते हुए जाति-पाति, ऊँच-नीच का विरोध किया गया वहीं परमात्मा की प्राप्ति को मानवीय जीवन के उद्देय के रूप में स्वीकार किया गया। धौतराम जी कहते है

''ना छोटा ना बडा है ना जात, अजात

ना ब्राह्मण ना बाणिया, ना छत्री राजात।''[4]

नितानंद जी ने भी जातिगत समानता व मानवीय एकता का महत्व बता मानवतावादी मूल्य के महत्व को प्रस्तुत किया।

''दया न उपजी जीव की, भख्या पराया मांस''

सो नर रहसी नरक में, जब लग धरणि अकास।''[1]

कहकर दया के महत्व को स्वीकारा है। हरियाणा के समस्त कवियों के विचार हमारे व्यवहारिक जीवन से जुड़े हुए है। संत ताराचन्द जी कहते है :-

''शराबी का कोई धर्म ना, लोटे कुरड़ी माँह।

कुत्ता मुँह में मूतता, उसकी सोधी नांह।।''[2]

इन काव्य पंक्तियो में आज अपने धर्म को खत्म करती जा रही युवा पीढ़ी में बढ़ती नशे की समस्या दिखा उसके दुष्ट परिणामों की ओर भी ध्यान दिला उससे बचने के संकेत विद्यमान है। इसी प्रकार आज

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

पाश्चात्य अंधानुकरण के दौर में रात्रि नृत्य, नशा, मांस भक्षण की निंदा करते हुए रचनाकार ने युवा पीढ़ी का मार्ग दर्शक किया है। मानवीय मूल्यों की हितकारी हमारी हरियाणा की लोक संस्कृति के रचनाकार ताराचन्द जी कहते है -

हल जोतो खेती बोओ, खूब कमाओ मीत

रैदास कबीरा कह गए, यही बड़ो की रीत।।"[3]

हरियाणा का लोक साहित्य तो शिष्ट साहित्य का प्रेरक है। जो परिवेश में आंचलिकता की अनुभूतियों को समेटे हुए है। जिसके लोकगीत, कथा, नाट्य, लोकोक्ति-मुहावरे, समस्त विधाएं उस खुशबु की भाँति है। जिसके अँचल की महक समस्त ओर फैली हुई है। सावन व फागुन के गीतों की महक उत्साह का प्रतीक है जो रोजमर्रा के जीवन की कुठां व समस्याओं से मानसिक राहत देकर प्रकृति का उल्लास भर देती है।

"अहा रे लाला! फाग्गण आया, रंग भरे रे लाला

एक ससुर-घर दो बहू: दोनों ए पाणी नै जाय"[1]

वहीं रातभर अभिनीत होती संगीत शैली में कीर्त्तन व नौटंकी हरियाणा के साहित्य व संस्कृति की देन है। यथार्थ भावनाओं को सहेजती हरियाणा की लोकोक्तियाँ - तू ही तू, आत्मा सो परमात्मा, धरम की जड़ सदा हरी, कुणबा खीर खां अर देवता भला मान्नै, आदि धर्म भावना व दर्शन, मूल्यों में मनुष्यों की महत्ता व नीति की विशेषताओं को प्रकट करती है।

आज के परिवेश में जहाँ स्वार्थीपन, लूटपाट, धोखाधड़ी, शराब, मांस आदि व्याप्त होने लगे है वहीं हमारी लोक संस्कृति हमें सम्बन्धों के प्रति प्रेम, आधुनिक परिवेश में पिसते मूल्य को सहेजना सीखाती है। जहाँ आधुनिक के परिवेश में मूल्यों की गिरावट की समस्या चरमोत्कर्ष पर है वहीं हमारा लोक साहित्य हमें हमारी संस्कृति के प्रति प्रेम व समन्वय का सन्तुलित परिचय करवाता है। जो अपनी प्रासंगिकता के

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

कारण सम्पूर्ण समाज को चिन्ताओं से मुक्त होकर जीवन जीने की एक गहरी और अर्थ पूर्ण दृष्टि प्रदान करता है। यही हरियाणा के लोक साहित्य का अमृत तत्व है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 भीम सिंह मलिक : 'हरियाणा लोक साहित्य, सांस्कृतिक सन्दर्भ, प्रकाशन : डॉ0 पृथ्वीराज कालिया, विजेन्द्रः जसरामः नीलम, भारत फोटो कम्पोजर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली - 110032
2. डॉ0 गुणपाल सांगवान : 'हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन' प्रकाशनः डॉ0 पृथ्वी राज कालिया, पारस पिटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली - 32
3. डॉ0 जय भगवान गोयल : 'हरियाणा पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं लोकवार्त्ता' आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006
4. डॉ0 जय भगवान गोयल : 'हरियाणा की साहित्य सम्पदा' आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006
5. डॉ0 जय भगवान गोयल : 'हरियाणावी लोक-साहित्य' आत्मा राम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006
6. रघुबीर सिंह मधाना : 'हरियाणावी साहित्य का इतिहास' लथमण साहित्य' डॉ0 बाबू राम प्रकाशन, दुर्गा कालोनी, जेल रोड़, रोहतक - 124001
7. डॉ0 नारायण चौधरी : 'लोक साहित्य के स्वरूप, का सैद्धान्तिक विवेचन' चन्द्रलोक प्रकाशन - 132, शिवराम कृपा मयूर पार्क, बसन्त बिहार, कानपुर - 208021
8. डॉ0 सुरेश गौतम : 'लोक साहित्य' संजय प्रकाशन 4378/4, डी, 209 जे.एम.डी. हाउस, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002